आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित(PEER REVIEWED) शोध-पत्रिका
खंड -1, अंक-1, अप्रैल-सितंबर 2025 (प्रवेशांक), apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

शिक्षा का मानवीय रूपांतरण: मध्यस्थ दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अर्पिता शर्मा
शोधार्थी, लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात
arpii17sharma@gmail.com
एवं
सुरेन्द्र पाठक
लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात
pathak06@gmail.com

शोध सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में एक ऐतिहासिक बदलाव का संकेत देती है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, मूल्यों की स्थापना, और मानवीय चेतना के जागरण पर बल देती है। यह नीति पारंपरिक रटने की शिक्षा से हटकर अनुभवात्मक, खोज-आधारित, संवाद-आधारित तथा मूल्य-संचालित शिक्षा की संकल्पना को प्रस्तुत करती है। इस शोध रिपोर्ट में शिक्षा के इस मानवीय रूपांतरण की आवश्यकता, दिशा और संभावनाओं का विश्लेषण मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) के परिप्रेक्ष्य में किया गया है।

मध्यस्थ दर्शन, जिसे आचार्य श्री अग्रहर नागराज द्वारा प्रतिपादित किया गया है, मानव-केन्द्रित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो ज्ञान, विवेक, व्यवहार और मूल्यों की समग्रता पर आधारित है। यह दर्शन व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच सह-अस्तित्व की समझ विकसित करता है और शिक्षण को केवल ज्ञान-प्राप्ति का माध्यम नहीं, अपितु मानव बनने की प्रक्रिया मानता है।

इस रिपोर्ट में यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल अवधारणाएं-जैसे नैतिकता, सहानुभूति, वैविध्य का सम्मान, पर्यावरणीय चेतना, और समावेशी शिक्षा—मध्यस्थ दर्शन के मूल सिद्धांतों के साथ सामंजस्य रखती हैं। यह अध्ययन शिक्षा में मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना, व्यवहारगत परिवर्तन, तथा विद्यालयी शिक्षा के मानवीकरण की दिशा में एक सशक्त मार्गदर्शन प्रदान करता है।

मुख्य शब्द : शिक्षा का मानवीकरण, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्व, मूल्य आधारित शिक्षा, मानवीय चेतना, व्यवहारगत परिवर्तन, समग्र शिक्षा, नैतिक शिक्षा, मानव-केन्द्रित शिक्षाशास्त्र

I. परिचय

मानवीय रूपांतरण की आवश्यकता और शिक्षा की भूमिका

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में मानव समाज कई जटिल चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें पारिस्थितिक संकट, सामाजिक संघर्ष, आर्थिक असमानता और व्यक्तिगत असंतोष प्रमुख हैं। ये समस्याएं अक्सर मानव के स्वयं के प्रति, अन्य मनुष्यों के प्रति और प्रकृति के प्रति समझ की कमी से उत्पन्न होती हैं। मानव में सुख, व्यवस्था और सामंजस्य में जीने की एक सहज आकांक्षा होती है, परंतु इस आकांक्षा की पूर्ति तब तक नहीं हो पाती जब तक कि स्वयं और अस्तित्व की सही समझ न हो।

इस संदर्भ में, शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षा ही वह प्राथमिक माध्यम है जिसके द्वारा मानव की धारणाएं, विश्वास और समझ निर्मित होती है। यह रिपोर्ट इस बात पर बल देती है कि मानवीय रूपांतरण केवल सूचना या कौशल प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह चेतना में एक गुणात्मक परिवर्तन है। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार, यह परिवर्तन "पशु चेतना" से "मानव चेतना" की ओर संक्रमण है। यह एक मूलभूत अस्तित्वगत बदलाव है, जो शिक्षा के उद्देश्यों को पारंपरिक अकादमिक सुधारों से कहीं आगे ले जाता है। यह रिपोर्ट मानवीय रूपांतरण के इस गहन लक्ष्य को प्राप्त करने में मध्यस्थ दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के दृष्टिकोणों का विश्लेषण करती है।

मध्यस्थ दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का संक्षिप्त परिचय

मध्यस्थ दर्शन, जिसे सह-अस्तित्ववाद के रूप में भी जाना जाता है, ए. नागराज द्वारा प्रस्तुत एक मानव-केंद्रित चिंतन विधि है। यह अस्तित्व की वास्तविकता पर एक मौलिक अन्वेषण है, जो पारंपरिक भौतिकवाद या अध्यात्मवाद से भिन्न है, और मानव के जागृत परंपरा में जीने के कार्यक्रम और प्रमाण को प्रस्तुत करता है । यह दर्शन प्रकृति, जीवात्मा और परमात्मा को अनादि मूल पदार्थ मानता है, और सहअस्तित्व को नित्य मानता है ।

दूसरी ओर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारत सरकार द्वारा अनुमोदित एक परिवर्तनकारी नीति है, जिसका उद्देश्य 21वीं सदी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए देश की शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार लाना है। यह नीति भारतीय मूल्यों पर आधारित एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना करती है, जो सभी के लिए सुलभ हो और भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने में सहायक हो।

II. मध्यस्थ दर्शन: मानवीय रूपांतरण का दार्शनिक आधार

मध्यस्थ दर्शन के मूल सिद्धांत: सह-अस्तित्ववाद और मानव की पहचान

मध्यस्थ दर्शन का केंद्रीय सिद्धांत "सह-अस्तित्व" है, जो वास्तविकता को एक मौलिक और नित्य उपस्थिति के रूप में प्रस्तुत करता है। इस दर्शन के अनुसार, संपूर्ण अस्तित्व व्यापक वस्तु (परमात्मा), गठनपूर्ण परमाणु (जीवन) का

मध्यांश (आत्मा) और क्रिया समुच्चय (प्रकृति) के सह-अस्तित्व में है। सभी इकाइयाँ—भौतिक-रासायनिक (जड़), चैतन्य (जीवन), और व्यापक सत्ता (क्रियाशून्य)—आपसी संबंध और सामंजस्य में वर्तमान हैं। यह दृष्टिकोण अस्तित्व के खंडित या आंतरिक और बाह्य) संघर्ष-आधारित विचारों को चुनौती देता है, यह प्रतिपादित करते हुए कि प्रकृति में कोई संघर्ष नहीं है, समस्या केवल मानव की समझ में है। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार, सह-अस्तित्व ही नित्य उपस्थिति है।

यह समझ कि "सह-अस्तित्व" ही मौलिक वास्तविकता है , मानवीय मूल्यों और आचरण के लिए एक सार्वभौमिक और वस्तुनिष्ठ आधार प्रदान करती है। यदि अस्तित्व स्वयं ही स्वाभाविक रूप से सामंजस्यपूर्ण है, तो मानवीय मूल्य मनमाने या सांस्कृतिक रूप से सापेक्ष होने के बजाय, खोजे जाने योग्य सत्य बन जाते हैं। यह दृष्टिकोण मूल्य शिक्षा के लिए एक सार्वभौमिक ढांचा प्रदान करता है, जिसे अनुभव और तर्क के माध्यम से सत्यापित किया जा सकता है, जिससे यह विश्वास-आधारित या सांप्रदायिक मूल्य प्रणालियों की सीमाओं से परे हो जाता है।

मध्यस्थ दर्शन मानव को एक चैतन्य इकाई ('जीवन') और एक भौतिक शरीर के संयोजन के रूप में परिभाषित करता है। 'जीवन' को जानने वाली, जागरूक इकाई के रूप में पहचाना जाता है, जो अविनाशी और अमर है, जिसमें अपनी इच्छाशक्ति और 'अनुभव' होता है। यह मानव को अन्य प्रजातियों से अलग करता है, क्योंकि अन्य जीव केवल 'जीने की इच्छा' रखते हैं, जबकि मानव में 'सुखपूर्वक जीने की इच्छा' होती है।

मानव अस्तित्व, मूल्य और उद्देश्य की अवधारणा

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार, मानव की मूलभूत आवश्यकता 'ज्ञान' है, "व्यापक सत्ता जागृत मानव में, से, के लिये कार्य-व्यवहार काल में नियम के रूप में, विचार काल में समाधान के रूप में, अनुभव काल में आनंद के रूप में और आचरण काल में न्याय के रूप में प्राप्त है क्योंकि सत्ता में संपूर्ण प्रकृति सम्पृक्त अविभाज्य रूप में विद्यमान है। यही सहअस्तित्व है" और इसी ज्ञान से 'सुख' की प्राप्ति होती है। यह भौतिक सुविधाओं की आवश्यकता से भिन्न है, हालांकि भौतिक सुविधाएं भी जीवन के लिए आवश्यक हैं, लेकिन वे निरंतर सुख का आधार नहीं हैं। मानव का आंतरिक असंतोष और बाहरी समस्याएं, जैसे आर्थिक और सामाजिक मुद्दे, 'स्वयं' की, अस्तित्व की, और अस्तित्व में अन्य इकाइयों के साथ मानव के उद्देश्य और संबंध की समझ की कमी के कारण उत्पन्न होती हैं।

"मानवीय आचरण" को सही समझ की अभिव्यक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है, जो अन्य मनुष्यों के साथ संबंधों में और प्रकृति के साथ व्यवहार में प्रकट होता है। यह आचरण निरंतर सुख, शांति और संतोष की ओर ले जाता है। यह दर्शन इस बात पर बल देता है कि अन्य जीवन रूपों में जीवों में केवल "जीने की इच्छा" (will to live) होती है, जबकि मनुष्यों में "सुखपूर्वक जीने की इच्छा" (will to live with happiness) होती है। यह अंतर मानव प्रेरणा की एक सूक्ष्म समझ को प्रकट करता है। इस अंतर का निहितार्थ यह है कि शिक्षा को, वास्तव में परिवर्तनकारी होने के लिए, मानव की निरंतर सुख की इस गहरी आकांक्षा को संबोधित करना चाहिए, न कि केवल

"जीने की इच्छा" और भौतिकता को। यह शैक्षिक लक्ष्यों का ध्यान मात्रात्मक उपलब्धियों से हटाकर गुणात्मक अस्तित्व की ओर मोड़ता है।

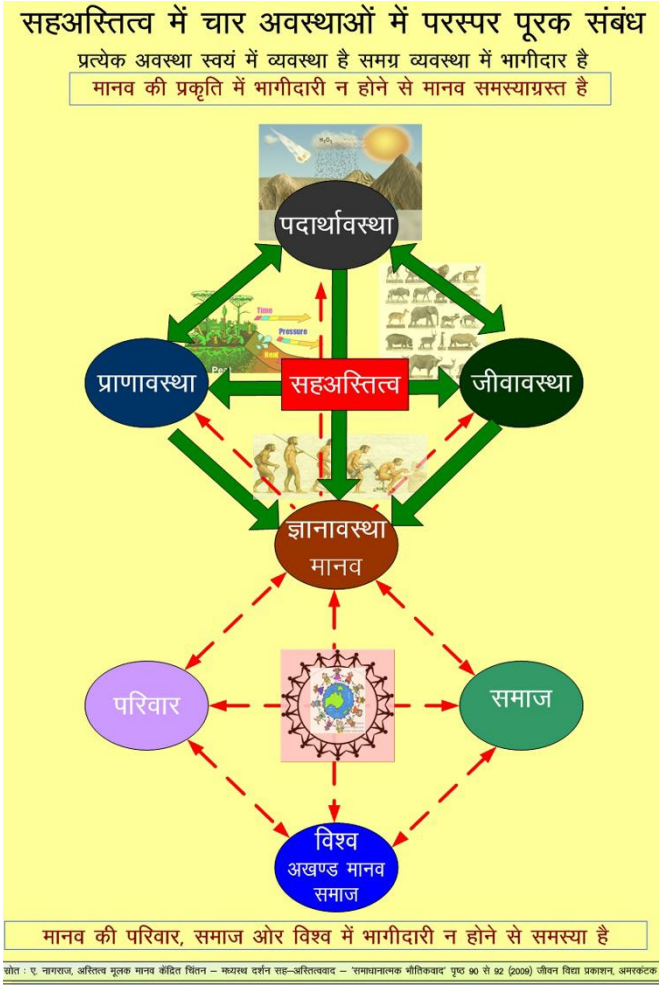

मानव का अंतिम उद्देश्य "जागृति" प्राप्त करना और "मानव चेतना" में जीना है। यह जागृति 'जीवन' में सभी दस क्रियाओं की जागृति तक पहुँचने को संदर्भित करती है, जिससे मानव वास्तविकता के चारों आयामों - रूप, गुण, स्वभाव (उद्देश्य), और धर्म (मौलिकता) - को 'देख' या समझ पाता है। यह समग्र ज्ञान आध्यात्मिक, बौद्धिक और भावनात्मक संतुष्टि की ओर ले जाता है, जो स्वयं ही सुख है। जब चैतन्य स्वयं में सभी दस क्रियाएं कार्यशील होती हैं, तो इसे 'क्रियापूर्णता' कहा जाता है, और जब ये सभी दस क्रियाएं पूर्णता के साथ जीवन में अभिव्यक्त होती हैं, तो इस स्थिति को 'आचरणपूर्णता' कहा जाता है।

शिक्षा का प्रयोजन: चेतना विकास और मानवीय आचरण

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार, शिक्षा का मूल प्रयोजन मानव चेतना में रूपांतरण को सक्षम करना और उसे जीवन में अभिव्यक्त करना है। शिक्षा मानव के चारों आयामों - अनुभूति/समझ, विचार/कल्पना, व्यवहार/सामाजिक, और

व्यवसाय/प्राकृतिक - की जागृति और अभिव्यक्ति को सक्षम बनाती है। यह मानव की आध्यात्मिक, बौद्धिक-तार्किक, भावनात्मक और भौतिक आवश्यकताओं को संबोधित करता है।

यह शैक्षिक दर्शन पारंपरिक "याद करने और रटने" (memorization and rote learning) के मॉडल को सीधे चुनौती देता है। यह इस बात पर बल देता है कि मानव की सहज आवश्यकता "जानना" (know) और "खोज करना" (explore) है। यह एक दार्शनिक औचित्य प्रदान करता है कि शिक्षा को वास्तविक समझ और अन्वेषण को सुविधाजनक बनाना चाहिए, न कि केवल सूचना हस्तांतरण को। यह अंतर्दृष्टि शिक्षार्थी-केंद्रित, पूछताछ-संचालित शिक्षण विधियों के लिए एक मजबूत सैद्धांतिक आधार प्रदान करती है। शिक्षा का उद्देश्य 'स्वयं' को सीधे संबोधित करना, जिज्ञासा को बढ़ावा देना, आलोचनात्मक सोच को विकसित करना और कल्पना और क्रिया की स्वतंत्रता का सम्मान करना है।

मध्यस्थ दर्शन आधारित शिक्षा के परिणाम और शैक्षणिक पहलें

मध्यस्थ दर्शन पर आधारित शिक्षा के सफल समापन पर, व्यक्ति में पांच प्रमुख गुण विकसित होते हैं: स्वयं में आश्वासन और विश्वास, अन्य मनुष्यों में उत्कृष्टता के प्रति सम्मान, ज्ञान और व्यक्तित्व में संतुलन, सामाजिक व्यवहार (जो समाज में असंतुलन पैदा नहीं करता), और व्यवसाय में आत्मनिर्भरता। यह शिक्षा अमानवीय विशेषताओं से मानवीय विशेषताओं और स्वभाव में गुणात्मक परिवर्तन लाती है, जिससे मानसिक, सामाजिक और प्राकृतिक संतुलन प्राप्त होता है।

मध्यस्थ दर्शन के प्रसार के लिए विभिन्न शैक्षणिक पहलें की गई हैं, जिनमें परिचयात्मक कार्यशालाएं, गहन पूर्णकालिक अध्ययन कार्यक्रम, वैकल्पिक विद्यालय और मौजूदा पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से हस्तक्षेप शामिल हैं। इस दर्शन की कार्यप्रणाली अवलोकन और तर्क पर आधारित है, यह गैर-आरोपणकारी है, और अनुभव, व्यवहार और प्रयोग के माध्यम से सत्यापनीय है। यह सत्यापनीयता पर जोर एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो मध्यस्थ दर्शन को विश्वास-आधारित प्रणालियों से अलग करता है। इसका निहितार्थ यह है कि यह जिस रूपांतरण की तलाश करता है वह रहस्यमय नहीं है, बल्कि एक प्रदर्शन योग्य, जीवंत वास्तविकता है। यह मध्यस्थ दर्शन को औपचारिक शिक्षा प्रणालियों में एकीकरण के लिए संभावित रूप से अधिक आकर्षक बनाता है, क्योंकि यह व्यक्ति के आचरण और अस्तित्व की स्थिति में एक मूर्त और अवलोकन योग्य परिवर्तन के लिए एक ढांचा प्रदान करता है। मध्यस्थ दर्शन के प्रस्ताव सार्वभौमिक, शाश्वत, जीवंत, संप्रेषणीय और सत्यापनीय हैं। सत्यापन की प्रक्रिया में निरीक्षण, परीक्षण और सर्वेक्षण शामिल है।

तालिका 1: मध्यस्थ दर्शन के प्रमुख सिद्धांत

सिद्धांत/अवधारणा	विवरण
सह-अस्तित्व (Coexistence)	संपूर्ण अस्तित्व (जड़, चैतन्य, व्यापक सत्ता) सह-अस्तित्व, आपसी संबंध और सामंजस्य में है। यह मौलिक वास्तविकता है जो मूल्यों का सार्वभौमिक आधार प्रदान करती है।

सिद्धांत/अवधारणा	विवरण
मानव (Human Being)	चैतन्य स्वयं ('जीवन') और भौतिक शरीर का संयोजन। 'जीवन' अविनाशी, अमर और 'सुखपूर्वक जीने की इच्छा' से प्रेरित है और शरीर नश्वर है।
मानव उद्देश्य (Human Purpose)	समाधान, समृद्धि, अभय और सह-अस्तित्व में जीना है, 'जागृति' प्राप्त करना और 'मानव चेतना' में जीना, जिससे 'क्रियापूर्णता' और 'आचरणपूर्णता' आती है।
ज्ञान (Knowledge)	मानव की मूलभूत आवश्यकता, जो सह अस्तित्व की समग्र समझ से प्राप्त होती है जो नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म और सत्य है जो निरंतर सुख की ओर ले जाती है।
मानवीय आचरण (Humane Conduct)	सही समझ की अभिव्यक्ति, जो आचरण में मूल्य, चरित्र और नैतिकता के साथ अन्य मनुष्यों और प्रकृति के साथ संबंधों में न्याय पूर्ण सामंजस्य और निरंतर सुख लाती है।
शिक्षा की भूमिका (Education's Role)	शिष्टता पूर्ण दृष्टि का उदय शिक्षा है जो 'पशु चेतना' से 'मानव चेतना' में परिवर्तन लाती है, और मानव के चारों आयामों (अनुभूति, विचार, व्यवहार, व्यवसाय) का विकास होता है।
सत्यापनीयता (Verifiability)	दर्शन के समझ अनुभव, व्यवहार और प्रयोग के माध्यम से सत्यापित किए जा सकते हैं, जिससे यह समझ रहस्यमय या विश्वास-आधारित नहीं रह जाता।
मूल पदार्थ (Original Substances)	प्रकृति (क्रिया समुच्चय शाश्वत), जीवन (गठनपूर्ण परमाणु-चैतन्य – अमर), और परमात्मा (व्यापक वस्तु- नित्य) तीनों अनादि (शाश्वत, अमर और नित्य) हैं।
धर्म (Dharma)	वह जो किसी वस्तु से अविभाज्य है; असंपृक्तता और मौलिकता है

III. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: समग्र विकास और मूल्य शिक्षा का दृष्टिकोण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुख्य उद्देश्य और स्तंभ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) का दृष्टिकोण एक भारत-केंद्रित शिक्षा प्रणाली बनाना है जो देश को एक जीवंत ज्ञान समाज में बदल दे, छात्रों में आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा दे। इसके प्रमुख उद्देश्यों में 2030 तक स्कूली शिक्षा में 100% सकल नामांकन अनुपात (GER) और 2035 तक उच्च शिक्षा में 50% GER प्राप्त करना शामिल है। नीति का लक्ष्य सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करना, बहुभाषावाद और सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देना है।

NEP 2020 पांच मुख्य स्तंभों पर आधारित है: पहुंच, समानता, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही। नीति का "भारतीय मूल्यों" और "सांस्कृतिक विरासत" पर जोर एक नीति-स्तर की पहचान को दर्शाता है कि शिक्षा को स्वदेशी ज्ञान में निहित होना चाहिए, जो विशुद्ध रूप से पश्चिमी मॉडलों से परे है। यह एक ऐसा वातावरण तैयार करता है जो मध्यस्थ दर्शन जैसे दार्शनिक ढांचों के लिए उपयुक्त है। यह नीतिगत स्थिति एक औपनिवेशिक या विशुद्ध रूप से वैश्वीकृत शैक्षिक प्रतिमान से एक सचेत बदलाव का संकेत देती है, जो भारत की समृद्ध दार्शनिक और सांस्कृतिक विरासत का लाभ उठाना चाहती है। यह मध्यस्थ दर्शन जैसे दर्शनशास्त्रों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर पैदा करता

है, जो भारतीय विचार में निहित एक व्यवस्थित ढांचा प्रदान करते हैं, ताकि इन "भारतीय मूल्यों" के लिए ठोस सामग्री और शैक्षणिक दृष्टिकोण प्रदान किए जा सकें।

समग्र विकास की अवधारणा और पाठ्यक्रम में इसका समावेश

NEP 2020 समग्र विकास को एक व्यापक दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित करती है, जिसमें बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक, कलात्मक और नैतिक आयाम शामिल हैं। यह नीति एक एकीकृत और बहु-विषयक पाठ्यक्रम की वकालत करती है, जिसमें विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) के साथ-साथ कला, मानविकी, खेल और व्यावसायिक विषय शामिल हैं। इसका उद्देश्य छात्रों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल विकसित करना है।

नीति का कठोर अकादमिक धाराओं से दूर और बहु-विषयक शिक्षा की ओर बढ़ना पिछली प्रणालियों के खंडित सीखने के परिणामों की सीधी प्रतिक्रिया है। यह एक कारण-कार्य संबंध को दर्शाता है जहां पिछली सीमाएं वर्तमान नीतिगत सुधारों को प्रेरित करती हैं। नीति स्पष्ट रूप से "छात्रों की क्षमता को सीमित करने वाली कठोर अकादमिक धाराओं को खत्म करने" और "सीखने के विभिन्न क्षेत्रों के बीच पदानुक्रम और साइलो" को दूर करने का लक्ष्य रखती है। यह इस बात की पहचान को इंगित करता है कि खंडित शिक्षा (एक पिछली समस्या) अधूरे विकास की ओर ले जाती है। नीति का बदलाव इस पहचान की गई समस्या के लिए एक सीधा प्रतिक्रिया है, जिसका उद्देश्य अधिक बहुमुखी व्यक्तियों को तैयार करना है जो जटिल वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के लिए तैयार हों।

मूल्य शिक्षा और कौशल विकास पर बल

NEP 2020 छात्रों में नैतिक जागरूकता, सहानुभूति, विविधता के प्रति सम्मान और पर्यावरणीय चेतना को बढ़ावा देने के लिए मूल्य शिक्षा (Section 4.4 और 4.5 -मूल्य-आधारित शिक्षा, नैतिकता, सहानुभूति, विविधता, और पर्यावरणीय चेतना) के एकीकरण पर जोर देती है। मूल्यों को स्थापित करने की रणनीतियों में पाठ्यक्रम एकीकरण, सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियां, अनुभवात्मक शिक्षा (Section 4.6 – अनुभवात्मक और गतिविधि-आधारित शिक्षण), कहानी सुनाना और सामुदायिक जुड़ाव शामिल हैं। नीति में मध्य विद्यालय से व्यावसायिक शिक्षा (Section 4.27–4.28 - मध्य विद्यालय स्तर से व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण) पर भी जोर दिया गया है, जिसका उद्देश्य रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए अकादमिक शिक्षा के साथ व्यावहारिक कौशल को एकीकृत करना है।

हालांकि NEP 2020 मूल्य शिक्षा और कौशल विकास पर जोर देती है, एक चुनौती यह सुनिश्चित करने में निहित है कि इन्हें अलग-अलग अतिरिक्त के रूप में नहीं माना जाए, बल्कि सीखने की मुख्य प्रक्रिया में गहराई से एकीकृत किया जाए। यह एक संभावित कार्यान्वयन अंतर है जिसे मध्यस्थ दर्शन का समग्र दृष्टिकोण पाटने में मदद कर सकता है। नीति एकीकरण के लिए रणनीतियों की रूपरेखा तैयार करती है, लेकिन वास्तविक चुनौती सतही समावेश से परे

जाकर एक गहरे, जैविक एकीकरण की ओर बढ़ना है, जहां मूल्य और कौशल केवल सिखाए नहीं जाते, बल्कि पूरी शैक्षिक यात्रा के हिस्से के रूप में जिए और अनुभव किए जाते हैं।

शिक्षण-अधिगम पद्धतियों में परिवर्तन

NEP 2020 के अनुच्छेद 4.6 और प्रस्तावना में कहा गया है कि रटने पर आधारित शिक्षा से हटकर अनुभवात्मक, समग्र, एकीकृत, पूछताछ-संचालित, खोज-उन्मुख, शिक्षार्थी-केंद्रित और चर्चा-आधारित शिक्षाशास्त्र की ओर बदलाव का प्रस्ताव करती है। पाठ्यक्रम सामग्री को कम करके मुख्य अनिवार्यताओं और आलोचनात्मक सोच पर ध्यान केंद्रित करने का सुझाव दिया गया है। नई मूल्यांकन विधियां वैचारिक समझ और समग्र विकास पर केंद्रित हैं, जिसमें 360-डिग्री रिपोर्ट कार्ड शामिल हैं। नीति में शिक्षकों के प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास पर भी जोर दिया गया है ताकि वे नए शैक्षणिक दृष्टिकोणों के अनुकूल हो सकें।

नीति का अनुभवात्मक सीखने पर जोर एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है जो मध्यस्थ दर्शन के शैक्षणिक दृष्टिकोण के साथ सीधे संरेखित है। यह साझा आधार व्यावहारिक एकीकरण के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। यह संरेखण शिक्षा के लिए एक साझा दृष्टिकोण को उजागर करता है जो सक्रिय जुड़ाव और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोग के माध्यम से सीखने को प्राथमिकता देता है।

तालिका 2: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुख्य उद्देश्य

उद्देश्य/स्तंभ	विवरण/लक्ष्य
सार्वभौमिक पहुंच (Universal Access)	2030 तक स्कूली शिक्षा में 100% GER और 2035 तक उच्च शिक्षा में 50% GER का लक्ष्य।
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा (Quality Education)	सभी के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना, जो भारतीय मूल्यों पर आधारित हो।
समग्र विकास (Holistic Development)	बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक, कलात्मक और नैतिक आयामों का पोषण करना।
मूल्य शिक्षा (Value Education)	नैतिक जागरूकता, सहानुभूति, विविधता के प्रति सम्मान और पर्यावरणीय चेतना को बढ़ावा देना।
कौशल विकास (Skill Development)	व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में एकीकृत करना, छात्रों को रोजगार के लिए तैयार करना।
बहुभाषावाद (Multilingualism)	मातृभाषा/स्थानीय/क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा पर बल, भारतीय भाषाओं के संरक्षण पर जोर।
लचीलापन (Flexibility)	छात्रों को विषयों का चयन करने और अपनी रुचियों का पीछा करने की स्वतंत्रता, कठोर धाराओं का उन्मूलन।
शिक्षक सशक्तिकरण	शिक्षकों के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास और प्रशिक्षण पर जोर।

उद्देश्य/स्तंभ	विवरण/लक्ष्य
(Teacher Empowerment)	
मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान (Foundational Literacy & Numeracy)	2025 तक कक्षा 3 तक के बच्चों के लिए आधारभूत कौशल सुनिश्चित करना।
अनुसंधान और नवाचार (Research & Innovation)	उच्च शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना।
पहुंच (Access)	सभी बच्चों के लिए शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करना।
समानता (Equity)	शिक्षा में अंतर को कम करना, समावेशी शिक्षा प्रदान करना।
सामर्थ्य (Affordability)	शिक्षा को सभी के लिए वहनीय बनाना।
जवाबदेही (Accountability)	शिक्षा प्रणाली में जवाबदेही सुनिश्चित करना।

IV. मानवीय रूपांतरण के परिप्रेक्ष्य में मध्यस्थ दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की तुलना

समानताएं: समग्र विकास, मूल्य शिक्षा और अनुभवात्मक अधिगम

मध्यस्थ दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच मानवीय रूपांतरण के संदर्भ में कई महत्वपूर्ण समानताएं हैं। दोनों ही अकादमिक उपलब्धि से परे समग्र विकास पर जोर देते हैं, जिसमें बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक आयाम शामिल हैं। यह एक व्यापक शैक्षिक दृष्टिकोण को दर्शाता है जो व्यक्ति के सभी पहलुओं को पोषित करने का लक्ष्य रखता है।

दोनों ही मूल्य शिक्षा के प्रति साझा प्रतिबद्धता रखते हैं, जिसका उद्देश्य नैतिक जागरूकता, सहानुभूति और जिम्मेदार नागरिकों का विकास करना है। यह साझा लक्ष्य एक ऐसे समाज के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण है जहां व्यक्ति न केवल कुशल हों बल्कि नैतिक रूप से भी सुदृढ़ हों।

इसके अतिरिक्त, दोनों रटने पर आधारित शिक्षा से दूर हटकर अनुभवात्मक और पूछताछ-आधारित सीखने की वकालत करते हैं। अनुभवात्मक शिक्षा छात्रों को वास्तविक दुनिया के संदर्भों में ज्ञान लागू करने की अनुमति देती है, जिससे सीखने की प्रक्रिया अधिक सार्थक और आकर्षक बनती है। समग्र विकास, मूल्य शिक्षा और अनुभवात्मक शिक्षा पर यह अभिसरण आकस्मिक नहीं है, बल्कि पारंपरिक, खंडित शिक्षा प्रणालियों की सीमाओं की एक साझा पहचान को दर्शाता है जो पूर्ण मनुष्यों के पोषण में विफल रही हैं। यह शैक्षिक विचार में एक व्यापक प्रतिमान बदलाव को इंगित करता है, जिसका हिस्सा मध्यस्थ दर्शन और NEP 2020 दोनों हैं।

पूरकता: दार्शनिक गहराई और नीतिगत ढांचा

मध्यस्थ दर्शन और NEP 2020 एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं। मध्यस्थ दर्शन मानवीय उद्देश्य, अस्तित्व और मूल्यों की समझ के लिए गहन दार्शनिक गहराई और एक सार्वभौमिक ढांचा प्रदान करता है। यह मानवीय रूपांतरण

के "क्यों" और "क्या" को स्पष्ट करता है। यह दर्शन मानव के 'जीवन' के चार आयामों (अनुभूति, विचार, व्यवहार, व्यवसाय) को संबोधित करके समग्र विकास को समृद्ध करता है, यह सुनिश्चित करता है कि मानव की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया जाए।

इसके विपरीत, NEP 2020 एक व्यापक नीतिगत ढांचा प्रदान करती है, जो बड़े पैमाने पर कार्यान्वयन के लिए आवश्यक संरचनात्मक, पाठ्यचर्या संबंधी और शैक्षणिक परिवर्तनों की रूपरेखा तैयार करती है। यह शिक्षा प्रणाली के भीतर रूपांतरण के "कैसे" और "कहां" को संबोधित करती है।

मध्यस्थ दर्शन का "सार्वभौमिक" और "गैर-सांप्रदायिक" मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण NEP 2020 के "भारतीय मूल्यों" को स्थापित करने के लक्ष्य के लिए एक मजबूत, सत्यापनीय दार्शनिक आधार प्रदान कर सकता है, बिना सांस्कृतिक सापेक्षता या संकीर्ण व्याख्याओं में पड़े। यह एक महत्वपूर्ण पूरकता है जहां मध्यस्थ दर्शन NEP की सांस्कृतिक आकांक्षाओं के लिए बौद्धिक कठोरता प्रदान कर सकता है। यदि "भारतीय मूल्यों" को सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति के रूप में समझा जाता है (जैसा कि मध्यस्थ दर्शन अस्तित्व को समझने के माध्यम से खोजे जाने योग्य मानता है), तो मध्यस्थ दर्शन यह सुनिश्चित करने के लिए दार्शनिक गहराई प्रदान कर सकता है कि NEP का "भारतीय मूल्य" घटक केवल सांस्कृतिक सिद्धांत न हो, बल्कि मानव के अस्तित्व और जीवन की एक सत्यापनीय, सार्वभौमिक समझ में निहित हो।

भिन्नताएं और संभावित चुनौतियां

मध्यस्थ दर्शन और NEP 2020 के बीच कुछ महत्वपूर्ण अंतर भी हैं जो संभावित चुनौतियां पेश कर सकते हैं। मध्यस्थ दर्शन एक दार्शनिक प्रणाली है जिसका उद्देश्य जीवन का समग्र रूपांतरण है, जबकि NEP 2020 एक राष्ट्रीय संदर्भ में शैक्षिक सुधार के लिए एक नीति है। मध्यस्थ दर्शन अस्तित्वगत और मूलभूत है, जबकि NEP प्रणालीगत और सुधारवादी है।

रूपांतरण की गहराई में भी अंतर है। मध्यस्थ दर्शन मानव चेतना के मौलिक रूपांतरण (चेतना विकास) और निश्चित आचरण (आचरणपूर्णता) का लक्ष्य रखता है , जो नीति द्वारा आमतौर पर मांगे गए औसत दर्जे के परिणामों (जैसे GER, कौशल सेट) की तुलना में एक गहरा, अधिक गुणात्मक बदलाव है। सबसे महत्वपूर्ण संभावित चुनौती मध्यस्थ दर्शन के गहन दार्शनिक और अनुभवात्मक दृष्टिकोण को NEP 2020 के ढांचे के भीतर औसत दर्जे के, स्केलेबल नीतिगत हस्तक्षेपों में अनुवाद करना है। यह दार्शनिक आदर्शों और व्यावहारिक नीति कार्यान्वयन के बीच के अंतर को उजागर करता है।

कार्यान्वयन के पैमाने पर भी भिन्नता है। मध्यस्थ दर्शन की पहलें वर्तमान में अधिक स्थानीयकृत और कार्यशाला-आधारित हैं , जबकि NEP 2020 एक राष्ट्रीय स्तर की नीति है जिसके लिए बड़े पैमाने पर प्रणालीगत परिवर्तनों की आवश्यकता है। शिक्षकों की तैयारी भी एक चुनौती है; मध्यस्थ दर्शन के दर्शन को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए शिक्षकों को जिस गहराई से समझ की आवश्यकता होती है वह सामान्य व्यावसायिक विकास से परे है, जो

व्यापक रूप से अपनाने के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती पेश करती है। अंततः, मध्यस्थ दर्शन का "अनुभूति" और "आचरण" पर ध्यान पारंपरिक नीति-संचालित मेट्रिक्स का उपयोग करके मूल्यांकन करना मुश्किल हो सकता है, जो अक्सर मात्रात्मक परिणामों पर निर्भर करते हैं।

तालिका 3: मध्यस्थ दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की तुलना

आयाम	मध्यस्थ दर्शन	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
प्रकृति/दायरा	जीवन रूपांतरण के लिए एक दार्शनिक प्रणाली, अस्तित्वगत और मूलभूत।	शैक्षिक सुधार के लिए एक राष्ट्रीय नीति, प्रणालीगत और सुधारवादी।
शिक्षा का मुख्य उद्देश्य	'पशु चेतना' से 'मानव चेतना' में परिवर्तन, 'जागृति' और 'आचरणपूर्णता' प्राप्त करना।	भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना, समग्र विकास और 21वीं सदी के कौशल का पोषण।
मानवीय रूपांतरण की अवधारणा	चेतना का गुणात्मक परिवर्तन, स्वयं, परिवार, समाज, अस्तित्व और मानवीय आचरण की समझ से प्राप्त।	बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक, कलात्मक और नैतिक विकास का समग्र दृष्टिकोण।
मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण	अस्तित्व की वास्तविकता में निहित सार्वभौमिक, सत्यापनीय, गैर-सांप्रदायिक मूल्य।	भारतीय मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत पर आधारित, नैतिक जागरूकता और सामाजिक जिम्मेदारी पर जोर।
शैक्षणिक जोर	स्वयं व सह अस्तित्व में अन्वेषण, संवाद, समालोचनात्मक सोच, कल्पना की स्वतंत्रता, रटने के बजाय जानना-मानना- पहचानना और निर्वाह करना।	अनुभवात्मक, पूछताछ-संचालित, शिक्षार्थी-केंद्रित, चर्चा-आधारित शिक्षाशास्त्र।
मूल्यांकन फोकस	अनुभूति, आचरण, व्यवहार और कार्य में गुणात्मक परिवर्तन और आंतरिक समाधान।	वैचारिक समझ, समग्र रिपोर्ट कार्ड, कौशल-आधारित परिणाम।
कार्यान्वयन का पैमाना	स्थानीयकृत पहलें, कार्यशाला-आधारित, व्यक्तिगत अध्ययन पर केंद्रित।	राष्ट्रीय स्तर की नीति, बड़े पैमाने पर प्रणालीगत परिवर्तन।
दार्शनिक आधार	सह-अस्तित्ववाद, अस्तित्वमूलक मानव-केंद्रित चिंतन, प्रत्यक्ष अनुभूति पर आधारित।	भारतीय लोकाचार, 21वीं सदी की आवश्यकताओं और वैश्विक मानकों पर आधारित।

V. मध्यस्थ दर्शन को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के ढांचे में एकीकृत करने के अवसर और चुनौतियां

एकीकरण के अवसर: भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्य-आधारित शिक्षा

मध्यस्थ दर्शन को NEP 2020 के ढांचे में एकीकृत करने के कई महत्वपूर्ण अवसर हैं, विशेष रूप से भारतीय ज्ञान प्रणाली और मूल्य-आधारित शिक्षा के संदर्भ में।

1. **मूल्य शिक्षा के लिए दार्शनिक आधार:** मध्यस्थ दर्शन मूल्य शिक्षा के लिए एक गहरा, सत्यापनीय और सार्वभौमिक दार्शनिक आधार प्रदान कर सकता है। यह NEP 2020 के "भारत-केंद्रित शिक्षा प्रणाली" के

लक्ष्य को मजबूत कर सकता है, मूल्यों को केवल निर्देशात्मक नैतिकता के बजाय अस्तित्व में निहित समझ के रूप में प्रस्तुत करके। यह एकीकरण NEP 2020 के "गुणवत्ता" और "जवाबदेही" स्तंभों को बढ़ाने में मदद कर सकता है। यह मानव रूपांतरण के गुणात्मक मूल्यांकन के लिए एक ढांचा प्रदान करता है, जो मात्रात्मक मेट्रिक्स से आगे बढ़ता है। यदि शिक्षा का अंतिम लक्ष्य मानव रूपांतरण है, तो शिक्षा की "गुणवत्ता" को इस रूपांतरण की सीमा से मापा जाना चाहिए। मध्यस्थ दर्शन इस गुणात्मक परिवर्तन का मूल्यांकन करने के लिए एक ढांचा प्रदान करता है, उदाहरण के लिए, देखे गए व्यवहार, संबंधों और आंतरिक समाधान के माध्यम से, जो नीति की जवाबदेही की आवश्यकताओं के साथ संरेखित होता है।

2. **समग्र विकास को बढ़ाना:** मध्यस्थ दर्शन की मानव की व्यापक समझ (जीवन + शरीर) और उसके जीवन के चार आयामों (अनुभूति, विचार, व्यवहार, व्यवसाय) से NEP 2020 के समग्र विकास ढांचे को समृद्ध किया जा सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि मानव की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया जाए।

3. **अनुभवात्मक सीखने को मजबूत करना:** मध्यस्थ दर्शन की स्थापित शैक्षणिक विधियां, जैसे स्वयं-अन्वेषण, संवाद और चिंतनशील अभ्यास, NEP 2020 के अनुभवात्मक और पूछताछ-आधारित सीखने पर जोर के लिए व्यावहारिक मॉडल प्रदान कर सकती हैं।

4. **सामाजिक समस्याओं का समाधान:** मध्यस्थ दर्शन का आंतरिक विरोधाभासों को हल करने और मानव-मानव और मानव-प्रकृति संबंधों में सामंजस्य स्थापित करने पर ध्यान सीधे NEP 2020 के "न्यायसंगत और जीवंत ज्ञान समाज" के निर्माण और जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लक्ष्यों के साथ संरेखित है।

कार्यान्वयन में चुनौतियां: शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधन और प्रणालीगत अनुकूलन

मध्यस्थ दर्शन को NEP 2020 के ढांचे में एकीकृत करने में कई महत्वपूर्ण चुनौतियां भी हैं:

1. **शिक्षक प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण:** सबसे महत्वपूर्ण चुनौती शिक्षकों के लिए मध्यस्थ दर्शन के दार्शनिक सिद्धांतों और शैक्षणिक विधियों को आंतरिक बनाने और प्रभावी ढंग से प्रदान करने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण का पैमाना और गहराई है। यह सामान्य कौशल-आधारित प्रशिक्षण से परे है और शिक्षक की अपनी समझ और जीवन में बदलाव की मांग करता है।

2. **संसाधन आवंटन और बुनियादी ढांचा:** अनुभवात्मक सीखने और मूल्य शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए, विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में, पर्याप्त बुनियादी ढांचे, सीखने की सामग्री और निरंतर वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है।

3. **परिवर्तन का प्रतिरोध:** शिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों और यहां तक कि छात्रों के बीच मौजूदा पारंपरिक मानसिकता से प्रतिरोध को दूर करना एक चुनौती है, जो रटने पर आधारित शिक्षा और परीक्षा-केंद्रित प्रणालियों के आदी हो सकते हैं। "परिवर्तन के प्रतिरोध" की चुनौती इस तथ्य से बढ़ जाती है कि मध्यस्थ दर्शन विश्वदृष्टि में एक मौलिक बदलाव का प्रस्ताव करता है, जो मौजूदा प्रतिमानों के आदी लोगों के लिए परेशान करने वाला हो सकता है। इसका अर्थ यह है कि एकीकरण के प्रयासों को थोपने के बजाय संवाद और सत्यापन को प्राथमिकता देनी चाहिए। यह इस बात पर जोर देता है कि प्रतिरोध केवल नए नियमों या पाठ्यक्रम के बारे में नहीं है, बल्कि यह गहरी मान्यताओं और समझ को चुनौती देता है। इसलिए, प्रभावी कार्यान्वयन के लिए आत्म-अन्वेषण और सत्यापन की प्रक्रिया आवश्यक है, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सम्मान करती है।

4. **पाठ्यक्रम एकीकरण:** मध्यस्थ दर्शन की अवधारणाओं को मौजूदा पाठ्यक्रम में एक अलग विषय के रूप में नहीं, बल्कि सभी विषयों में व्याप्त होने के रूप में सहज रूप से एकीकृत करना एक चुनौती है।

5. **मूल्यांकन तंत्र:** चेतना विकास और मानवीय आचरण के गुणात्मक पहलुओं का मूल्यांकन करने के लिए मजबूत और उपयुक्त मूल्यांकन ढांचे विकसित करना, केवल संज्ञानात्मक या कौशल-आधारित परिणामों के बजाय।

6. **स्केलेबिलिटी:** स्थानीयकृत मध्यस्थ दर्शन की पहलों की सफलता को राष्ट्रीय नीतिगत ढांचे में बदलना, विविध सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में गुणवत्ता बनाए रखते हुए महत्वपूर्ण चुनौतियां प्रस्तुत करता है।

VI. निष्कर्ष एवं अनुशंसाएं

मानवीय रूपांतरण के लिए एकीकृत दृष्टिकोण का महत्व

मानवीय रूपांतरण एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है जिसके लिए शिक्षा में एक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता है। यह रिपोर्ट दर्शाती है कि मध्यस्थ दर्शन की दार्शनिक गहराई और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रणालीगत नीतिगत सुधारों का संश्लेषण, एक ऐसे शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर सकता है जो न केवल कुशल व्यक्तियों का उत्पादन करता है, बल्कि नैतिक रूप से सुदृढ़, सामाजिक रूप से जिम्मेदार और आंतरिक रूप से सुलझे हुए मानवों का भी निर्माण करता है। इस तरह का एकीकरण एक सामंजस्यपूर्ण समाज और प्रकृति के साथ सतत सहअस्तित्व की ओर ले जाएगा।

नीति निर्माताओं और शिक्षाविदों के लिए विस्तृत अनुशंसाएं

मध्यस्थ दर्शन के सिद्धांतों को NEP 2020 के ढांचे में प्रभावी ढंग से एकीकृत करने और मानवीय रूपांतरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, निम्नलिखित विस्तृत अनुशंसाएं प्रस्तुत की जाती हैं:

पाठ्यक्रम विकास

- **पायलट कार्यक्रम और मॉड्यूल:** मध्यस्थ दर्शन के सह-अस्तित्व, मानव पहचान और मानवीय आचरण के सिद्धांतों पर आधारित पायलट कार्यक्रम और मॉड्यूल विकसित किए जाएं। इन्हें प्रारंभिक बचपन से उच्च शिक्षा तक विभिन्न विषयों में एकीकृत किया जाना चाहिए।
- **मूल्य शिक्षा का एकीकरण:** मध्यस्थ दर्शन के सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के ढांचे से प्रेरणा लेते हुए, मूल्य शिक्षा को कोर पाठ्यक्रम में स्पष्ट रूप से बुना जाए, बजाय इसके कि इसे एक अलग विषय या नैतिक निर्देश के रूप में माना जाए।
- **अंत:विषय परियोजनाएं:** सह-अस्तित्व के दृष्टिकोण से मानव-मानव और मानव-प्रकृति संबंधों का अन्वेषण करने वाली अंत:विषय परियोजनाओं पर जोर दिया जाए।

शैक्षणिक नवाचार

- **प्राथमिक शिक्षण पद्धतियां:** अनुभवात्मक शिक्षा, स्वयं-अन्वेषण और संवाद को प्राथमिक शिक्षण पद्धतियों के रूप में प्राथमिकता दी जाए, जो मध्यस्थ दर्शन और NEP 2020 दोनों के साथ संरेखित हों।
- **आलोचनात्मक सोच और विवेक:** छात्रों को वास्तविकता और मूल्यों पर प्रस्तावों को अपने स्वयं के अनुभव और तर्क के माध्यम से सत्यापित करने की अनुमति देते हुए, आलोचनात्मक सोच और विवेक को प्रोत्साहित किया जाए।
- **विश्वास-आधारित शिक्षण वातावरण:** शिक्षकों और छात्रों के बीच विश्वास और आपसी पूर्ति पर आधारित सीखने का माहौल विकसित किया जाए, भय और प्रलोभन से दूर।

शिक्षक सशक्तिकरण और प्रशिक्षण

- **व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम:** शिक्षकों के लिए व्यापक, दीर्घकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किए जाएं जो मध्यस्थ दर्शन की दार्शनिक समझ पर ध्यान केंद्रित करें, जिससे शिक्षक मानवीय आचरण के सिद्धांतों को आत्मसात कर सकें।
- **स्वयं-अन्वेषण के अवसर:** शिक्षकों को अवधारणाओं के स्वयं-अन्वेषण और सत्यापन के अवसर प्रदान किए जाएं, यह पहचानते हुए कि एक शिक्षक की अपनी समझ प्रभावी मूल्य शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।
- **मेंटरशिप कार्यक्रम:** अनुभवी जीवन विद्या चिकित्सकों द्वारा मुख्यधारा के शिक्षकों का मार्गदर्शन करने के लिए मेंटरशिप कार्यक्रम स्थापित किए जाएं।

मूल्यांकन सुधार

- **गुणात्मक मूल्यांकन ढांचे:** गुणात्मक मूल्यांकन ढांचे विकसित किए जाएं जो मानवीय आचरण, संबंधों और स्वयं-समाधान में छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन कर सकें, मौजूदा संज्ञानात्मक और कौशल-आधारित मूल्यांकनों के पूरक के रूप में।
- **सहकर्मी और स्वयं-मूल्यांकन:** चिंतनशील प्रथाओं और आपसी मूल्यांकन को बढ़ावा देने के लिए सहकर्मी और स्वयं-मूल्यांकन विधियों को शामिल किया जाए।

अनुसंधान और प्रलेखन

- **शैक्षणिक अनुसंधान और केस स्टडीज:** विभिन्न शैक्षणिक सेटिंग्स में मध्यस्थ दर्शन के कार्यान्वयन पर शैक्षणिक अनुसंधान और केस स्टडीज का समर्थन किया जाए, सर्वोत्तम प्रथाओं, चुनौतियों और परिणामों का दस्तावेजीकरण किया जाए।
- **सहयोग:** मध्यस्थ दर्शन चिकित्सकों और शैक्षिक शोधकर्ताओं के बीच सहयोग को सुविधाजनक बनाया जाए ताकि NEP 2020 ढांचे के भीतर मानव रूपांतरण पर इसके प्रभाव का व्यवस्थित रूप से मूल्यांकन किया जा सके।

सामुदायिक जुड़ाव

- **अभिभावक और सामुदायिक भागीदारी:** शैक्षिक प्रक्रिया में अभिभावक और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा दिया जाए, मानवीय मूल्यों और एक सामंजस्यपूर्ण समाज की दृष्टि की साझा समझ को बढ़ावा दिया जाए।
- **सार्वजनिक कार्यशालाएं और संवाद:** मध्यस्थ दर्शन और समकालीन सामाजिक चुनौतियों के लिए इसकी प्रासंगिकता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए सार्वजनिक कार्यशालाएं और संवाद आयोजित किए जाएं।

ये अनुशंसाएं एक ऐसे शिक्षा प्रणाली के निर्माण की दिशा में एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती हैं जो न केवल अकादमिक रूप से उत्कृष्ट हो, बल्कि मानव की गहरी आकांक्षाओं को भी पूरा करती हो, जिससे एक अधिक सामंजस्यपूर्ण, न्यायसंगत और सतत भविष्य का मार्ग प्रशस्त हो सके।

फुटनोट में उद्धरण

1. Kalyan Colony, Kekri, Ajmer
2. https://madhyasth-darshan.info/philosophy/explore-concepts/basics/
3. https://www.researchgate.net/publication/344262323_Madhaysth_Darshan_Based_Value_Education
4. https://www.scribd.com/document/848526694/Madhyasth-darshan
5. https://madhyasth-darshan.info/philosophy-of-education/
6. ए. नागराज, समाधानात्मक भौतिकवाद
7. ए. नागराज, मानव व्यवहार दर्शन
8. ए. नागराज, मानव व्यवहार दर्शन (पृष्ठ-2)
9. ए. नागराज, मानव अभ्यास दर्शन
10. https://www.education.gov.in/en/nep/about-nep
11. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
12. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
13. "The policy envisages a shift from rote learning to experiential learning, holistic and integrated pedagogy, inquiry-driven, discovery-oriented, learner-centred and discussion-based teaching methods…"
14. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.

संदर्भ सूची

1. Atmiya University. (n.d.). *मध्यस्थ दर्शन - सहअस्तित्ववाद*. https://www.atmiyauni.ac.in
2. Bhumi Publishing. (n.d.). *NEP-2020: Challenges and opportunities*. https://www.bhumipublishing.com
3. BPAS Journals. (n.d.). *Happiness classrooms: Need and significance*. https://www.bpasjournals.com
4. Chawda, H. (2020). *Madhaysth Darshan-based value education*. ResearchGate. https://www.researchgate.net/publication/344262323
5. Drishti IAS. (n.d.). *नई शिक्षा नीति, 2020*. https://www.drishtiias.com/hindi
6. Education Department, Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. https://www.education.gov.in

7. Extramarks. (n.d.). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) - NEP 2020 की प्रमुख विशेषताएँ*. https://www.extramarks.com
8. Granthaalayah Publication. (n.d.). *Integrating value education for holistic development*. https://www.granthaalayahpublication.org
9. IJFMR. (n.d.). *NEP 2020 Study: Challenges, Approaches, Changes, Opportunities, and Criticism*. https://www.ijfmr.com
10. IJNRD. (n.d.). *The present and future impact of implementation of NEP 2020 on higher education in India*. https://www.ijnrd.org
11. IJRPR. (n.d.). *A critical analysis of the National Education Policy 2020: Implications and challenges*. https://www.ijrpr.com
12. International Institute for Population Sciences (IIPS). (n.d.). *National Education Policy (NEP) 2020*. https://www.iipsindia.ac.in
13. Jeevan Vidya. (n.d.). *Philosophy of education – Madhyasth Darshan – Jeevan Vidya. Existence is coexistence*. Madhyasth Darshan. Retrieved July 19, 2025, from https://madhyasth-darshan.info/philosophy-of-education
14. Lead School. (n.d.). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020): NEP 2020 in Hindi में पूरी जानकारी*. https://www.leadschool.in
15. Madhyasth Darshan. (n.d.). *Basic elements – Jeevan Vidya*. https://www.madhyasth-darshan.info/basic-elements
16. Madhyasth Darshan. (n.d.). *Concepts summary – Jeevan Vidya*. https://www.madhyasth-darshan.info/concepts-summary
17. Madhyasth Darshan. (n.d.). *Educational philosophy – Jeevan Vidya*. https://www.madhyasth-darshan.info/philosophy-of-education
18. Madhyasth Darshan. (n.d.). *FAQ's – Jeevan Vidya*. https://www.madhyasth-darshan.info/faqs
19. Madhyasth Darshan. (n.d.). *Philosophy of human practice – Jeevan Vidya*. https://www.madhyasth-darshan.info/human-practice
20. Madhyasth Darshan. (n.d.). *VECT concept note*. https://www.madhyasth-darshan.info/vect
21. Madhyasth-darshan.blogspot.com. (2017, September). *शब्द, परिभाषा और सन्दर्भ*. https://madhyasth-darshan-definitions.blogspot.com

22. Madhyasth-darshan.blogspot.com. (n.d.). *भारतीय परंपरागत दर्शनों की तुलना में मध्यस्थ दर्शन एक विकल्प - डॉ. सुरेन्द्र पाठक*. https://madhyasth-darshan.blogspot.com/2018/05/blog-post_22.html
23. Medium. (n.d.). *A case study on Indian schools*. https://www.medium.com
24. MyGov.in. (n.d.). *National Education Policy 2020 – A roadmap for Viksit Bharat*. https://blog.mygov.in
25. Namibian Studies. (n.d.). *Teaching methods in Madhyastha Darshan: A research perspective*. https://www.namibian-studies.comChawda, H. (2019). *Madhaysth Darshan based value education*. *Journal of Gujarat Research Society*, 21(7). Retrieved from https://www.researchgate.net/publication/344262323_Madhaysth_Darshan_Based_Value_Education
26. Natural Volatiles & Essential Oils (NVEO). (n.d.). *Exploring the impact of Tagore's educational philosophy on the development of NEP-2020*. https://www.nveo.org
27. ORF Online. (n.d.). *स्कूलों में कौशल शिक्षा: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने से बनते रास्ते*. https://www.orfonline.org
28. ResearchGate. (n.d.). *Integrating the Indian knowledge system into education through NEP-2020: Challenges, opportunities and strategies*. https://www.researchgate.net
29. Scribd. (n.d.). *Madhyasth Darshan | PDF | Existence | Spirituality*. https://www.scribd.com
30. SlideServe. (n.d.). *Alternative in education by Madhyasth Darshan - Jeevan Vidya*. https://www.slideserve.com
31. Testbook. (n.d.). *एनईपी, 2020: प्रमुख विशेषताएं, लाभ, चिंताएं – UPSC Notes*. https://www.testbook.com
32. Unknown Author. (n.d.). *Madhyasth darshan*. Scribd. Retrieved July 19, 2025, from https://www.scribd.com/document/848526694/Madhyasth-darshan
33. VIKASPEDIA. (n.d.). *शिक्षा और दर्शन में सम्बन्ध*. https://education.vikaspedia.in